सवालीराम

सवाल: कबूतर या पक्षी कंकड़ को कैसे पचाते हैं?

- शिक्षक, डाइट
मुज़फ्फरपुर, बिहार (2022)

जवाब: ठण्ड के दिनों की बात है, मैं छत पर बैठी धूप का लुत्फ उठा रही थी, कि तभी एक कबूतर आया। पास में कुछ दाने पड़े थे, वो उन्हें चुगने लगा। पर एक बात थी जो मुझे काफी अजीब लगी, वो दानों के साथ-साथ पत्थर भी खा रहा था। बस! फिर क्या था। मेरी तहकीकात शुरू! न जाने कितने लोगों को परेशान करने के बाद यह गुत्थी सुलझ ही गई।

कितनी दिलचस्प बात है कि कुछ खाते वक्त हमारे मुँह में गलती से भी पत्थर आ जाए तो हम परेशान हो जाते हैं और ये इतने छोटे-छोटे कबूतर पत्थर पचा भी लेते हैं। वास्तव में, वे कंकड़-पत्थर को पचाते नहीं बल्कि भोजन को पचाने में उनकी मदद लेते हैं। असल में, इसका ताल्लुक कबूतरों और पक्षियों के दाँत न होने से है। उड़ने के लिए, पक्षियों का हल्का होना बहुत ज़रूरी होता है, और माना जाता है कि इसी क्रमागत विकास की प्रक्रिया के चलते पक्षियों के दाँत नहीं हैं। शरीर को हल्का-फुल्का रखने के लिए उनकी हड्डियाँ भी खोखली (पोली) होती हैं। और भी कई परिवर्तन हुए हैं ताकि वे एक हवाई, फुर्तीला जीवन जी सकें।

खैर, उन सबमें न उलझते हुए यह कहा जा सकता है कि कंकड़-पत्थर पक्षियों में दाँत का काम करते हैं। पक्षियों में एक खास अंग होता है जिसे गिज़र्ड (gizzard) कहते हैं। उनके द्वारा खाए हुए कंकड़-पत्थर

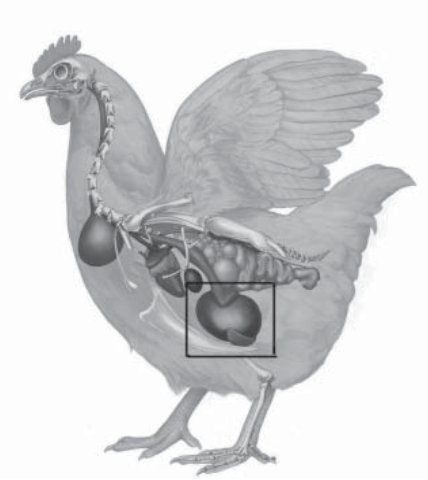

चित्र-1: *लाइन से घेरा हुआ हिस्सा गिज़र्ड है। गिज़र्ड भोजन पीसने के लिए पक्षी के पेट का एक मांसल, मोटी दीवार वाला हिस्सा होता है। पक्षियों द्वारा खाए गए कंकड़-पत्थर इसी में जाते हैं और फिर उनके खाए हुए को पीसने में मदद करते हैं।*

इसी में जाते हैं और फिर उनके खाने को पीसने में मदद करते हैं। गिज़र्ड एक बॉल-मिल की तरह काम करता है – जैसे इलायची को पीसने के लिए हम उसमें थोड़ी शक्कर मिला देते हैं। पीसने के बाद आगे का पाचन आसान हो जाता है क्योंकि छोटे-छोटे टुकड़ों पर पाचक रस ज़्यादा सरलता से काम कर सकते हैं।

अगर हम कबूतर की बात करें तो एक वयस्क कबूतर एक दिन में लगभग 30 ग्राम खाना खा लेता है, जिससे उसे ऊर्जा मिलती है। इसलिए पाचन क्रिया का तेज़ होना काफी आवश्यक हो जाता है और दाँतों की अनुपस्थिति में इनकी मदद करते हैं पत्थर-कंकड़।

तो यह है पक्षियों के पत्थर-कंकड़ खाने का राज़! ऐसे और सवालों के साथ आते रहिए सवालीराम के पास और सुलझाते रहिए अनेकों गुत्थियाँ।

अनमोल जैन: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं। साथ ही, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र. से अँग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर।

– – — – — –

इस बार का सवाल: क्या यह सच है कि उल्लू दिन में नहीं देख पाता?

हाटपिपलिया, ज़िला - देवास,
होशंगाबाद, म.प्र.,1995

आप हमें अपने जवाब sandarbh@eklavya.in पर भेज सकते हैं।

प्रकाशित जवाब देने वाले शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अन्य को पुस्तकों का गिफ्ट वाउचर भेजा जाएगा जिससे वे पिटाराकार्ट से अपनी मनपसन्द किताबें खरीद सकते हैं।